



Ashutosh

14 Feb 1970

04:25 AM

Bhadohi

Model: Web-MyKundli

Order No: 121830801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 13-14/02/1970
दिन _____: शुक्र-शनिवार
जन्म समय _____: 04:25:00 घंटे
इष्ट _____: 54:31:06 घटी
स्थान _____: Bhadohi
राज्य _____: Uttar Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 25:24:00 उत्तर
रेखांश _____: 82:35:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:00:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 04:25:20 घंटे
वेलान्तर _____: -00:14:19 घंटे
साम्पातिक काल _____: 13:59:33 घंटे
सूर्योदय _____: 06:36:33 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:51:32 घंटे
दिनमान _____: 11:14:59 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शिशिर
सूर्य के अंश _____: 01:23:44 कुम्भ
लग्न के अंश _____: 23:45:02 धनु

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: धनु - गुरु
राशि-स्वामी _____: वृष - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: रोहिणी - 1
नक्षत्र स्वामी _____: चन्द्र
योग _____: ऐन्द्र
करण _____: बालव
गण _____: मनुष्य
योनि _____: सर्प
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: गरुड़
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: ओ-ओमप्रकाश
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कुम्भ

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1891	माघ	25
पंजाबी	संवत : 2026	फाल्गुन	3
बंगाली	सन् : 1376	फाल्गुन	2
तमिल	संवत : 2026	मासी	2
केरल	कोल्लम : 1145	कुंभम	2
नेपाली	संवत : 2026	फाल्गुन	3
चैत्रादि	संवत : 2026	माघ	शुक्ल 9
कार्तिकादि	संवत : 2026	माघ	शुक्ल 9

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 8
तिथि समाप्ति काल _____ : 22:04:14
जन्म तिथि _____ : 9
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : कृतिका
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 27:34:51 घंटे
जन्म योग _____ : रोहिणी
सूर्योदय कालीन योग _____ : ब्रह्म
योग समाप्ति काल _____ : 13:23:23 घंटे
जन्म योग _____ : ऐन्द्र
सूर्योदय कालीन करण _____ : विष्टि
करण समाप्ति काल _____ : 09:40:21 घंटे
जन्म करण _____ : बालव
भयात _____ : 02:05:23
भभोग _____ : 64:52:58
भोग्य दशा काल _____ : चंद्र 9 वर्ष 8 मा 2 दि

घात चक्र

मास _____ : मार्गशीर्ष
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : हस्त
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : शकुनि
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : सर्प
लग्न _____ : वृष
सूर्य _____ : वृश्चिक
चन्द्र _____ : कन्या
मंगल _____ : धनु
बुध _____ : कन्या
गुरु _____ : मकर
शुक्र _____ : मकर
शनि _____ : तुला
राहु _____ : मकर

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

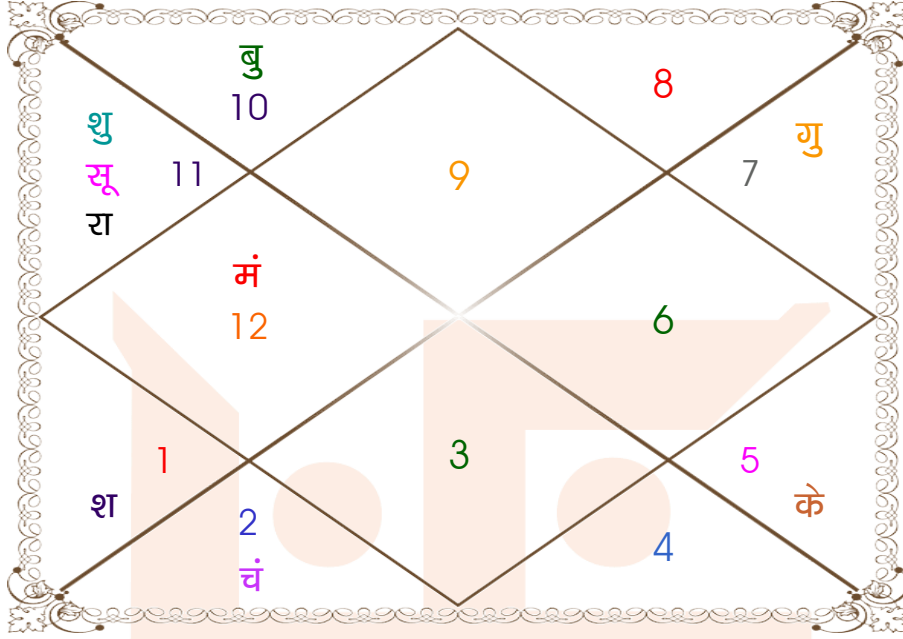
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

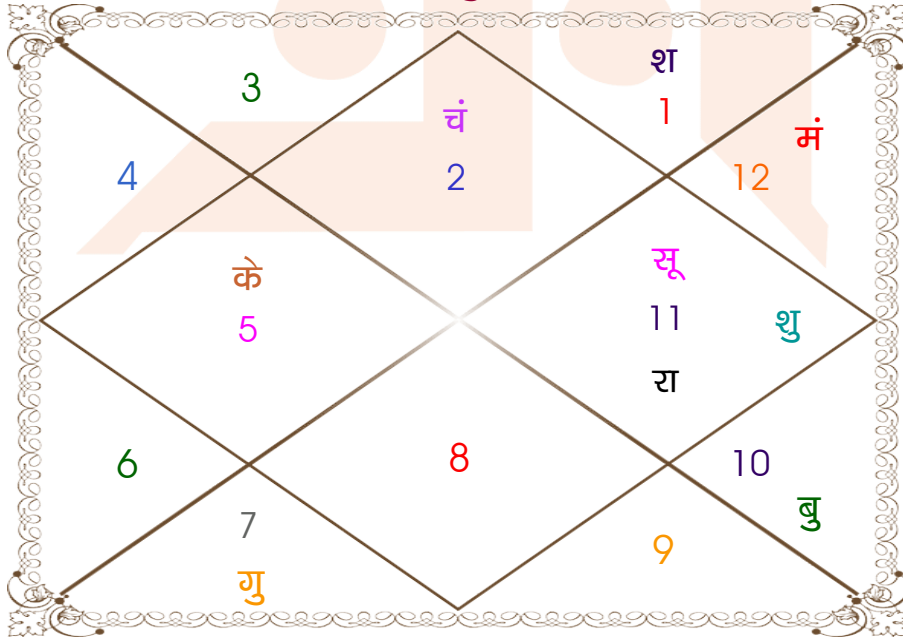
9835195382

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

मं	श	चं	
रा सू शु			
बु			के
ल		गु	

लग्न कुण्डली

चं	श	मं	रा सू शु
			बु
के			ल
	गु		

विंशोत्तरी
चन्द्र 9वर्ष 8मा 2दि
चन्द्र

14/02/1970

18/10/2089

चन्द्र	18/10/1979
मंगल	18/10/1986
राहु	17/10/2004
गुरु	17/10/2020
शनि	18/10/2039
बुध	17/10/2056
केतु	18/10/2063
शुक्र	18/10/2083
सूर्य	18/10/2089

योगिनी
सिद्धा 6वर्ष 9मा 8दि
धान्या

23/11/2023

23/11/2026

धान्या	22/02/2024
भ्रामरी	23/06/2024
भद्रिका	22/11/2024
उल्का	24/05/2025
सिद्धा	23/12/2025
संकटा	23/08/2026
मंगला	23/09/2026
पिंगला	23/11/2026

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

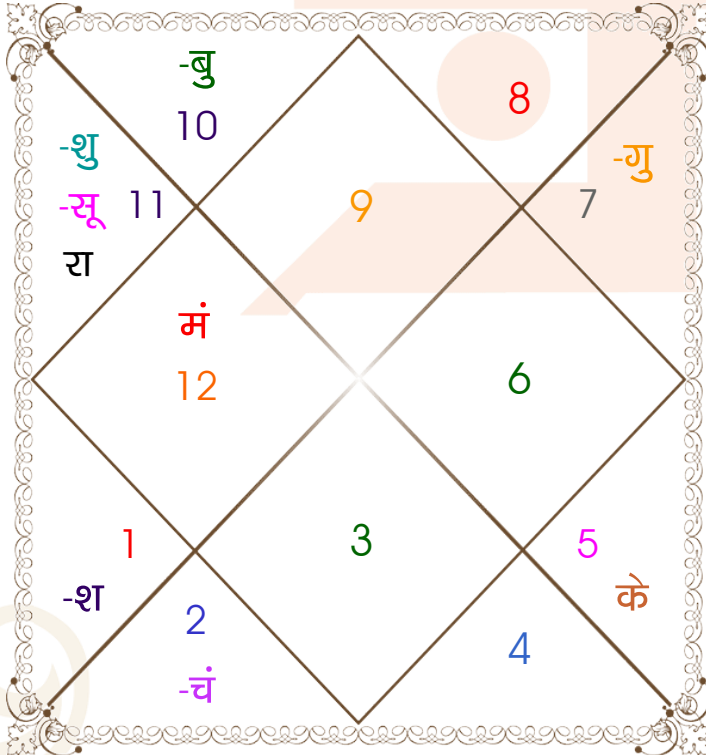
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	23:45:02	361:12:46	पूर्वाषाढा	4	20	गुरु	शुक्र	शनि	---
सूर्य			कुंभ	01:23:44	01:00:38	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	बुध	शत्रु राशि
चंद्र			वृष	10:26:03	12:27:50	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	चंद्र	मूलत्रिकोण
मंगल			मीन	21:17:52	00:43:47	रेवती	2	27	गुरु	बुध	शुक्र	मित्र राशि
बुध			मक	07:04:44	01:16:56	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	सम राशि
गुरु			तुला	12:28:22	00:01:07	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	शत्रु राशि
शुक्र	अ		कुंभ	06:14:16	01:15:10	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	चंद्र	मित्र राशि
शनि			मेष	10:08:14	00:04:17	अश्विनी	4	1	मंगल	केतु	शनि	नीच राशि
राहु	व		कुंभ	18:32:22	00:00:51	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	चंद्र	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	18:32:22	00:00:51	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	राहु	शत्रु राशि
हर्ष	व		कन्या	14:54:06	00:01:38	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	---
नेप			वृश्चि	07:21:53	00:00:35	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	केतु	---
प्लूटो	व		कन्या	03:24:39	00:01:19	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	---
दशम भाव			तुला	08:37:31	--	स्वाति	--	15	शुक्र	राहु	राहु	--

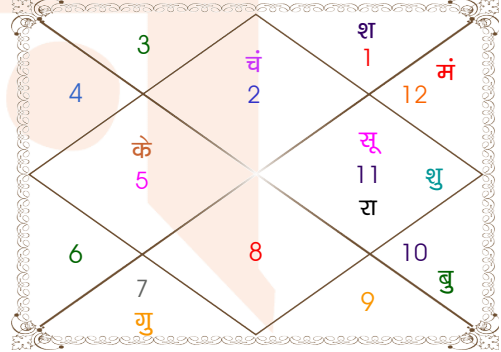
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:26:29

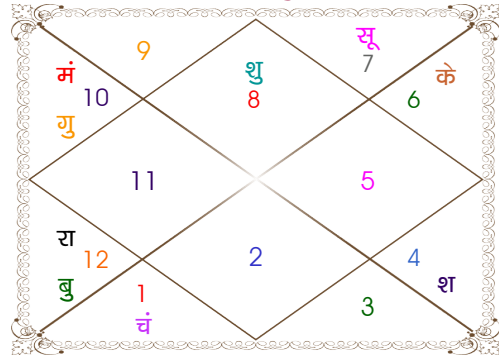
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	धनु 11:13:47	धनु 23:45:02
2	मकर 11:13:47	मकर 28:42:31
3	कुम्भ 16:11:16	मीन 03:40:01
4	मीन 21:08:46	मेष 08:37:31
5	मेष 21:08:46	वृष 03:40:01
6	वृष 16:11:16	वृष 28:42:31
7	मिथुन 11:13:47	मिथुन 23:45:02
8	कर्क 11:13:47	कर्क 28:42:31
9	सिंह 16:11:16	कन्या 03:40:01
10	कन्या 21:08:46	तुला 08:37:31
11	तुला 21:08:46	वृश्चिक 03:40:01
12	वृश्चिक 16:11:16	वृश्चिक 28:42:31

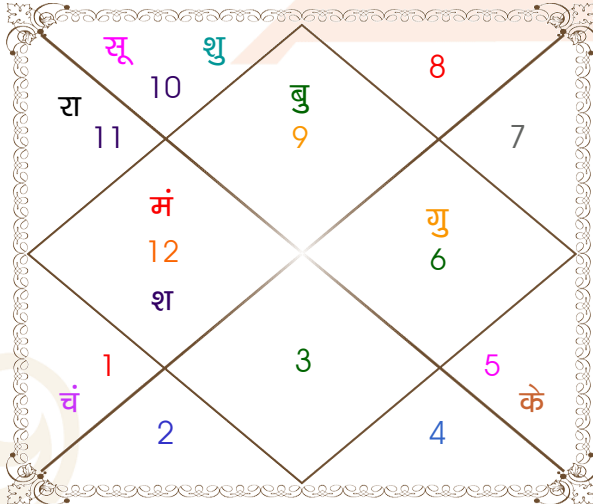
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	23:45:02
2	मकर	29:37:53
3	मीन	06:25:38
4	मेष	08:37:31
5	वृष	05:22:34
6	वृष	29:15:04
7	मिथुन	23:45:02
8	कर्क	29:37:53
9	कन्या	06:25:38
10	तुला	08:37:31
11	वृश्चिक	05:22:34
12	वृश्चिक	29:15:04

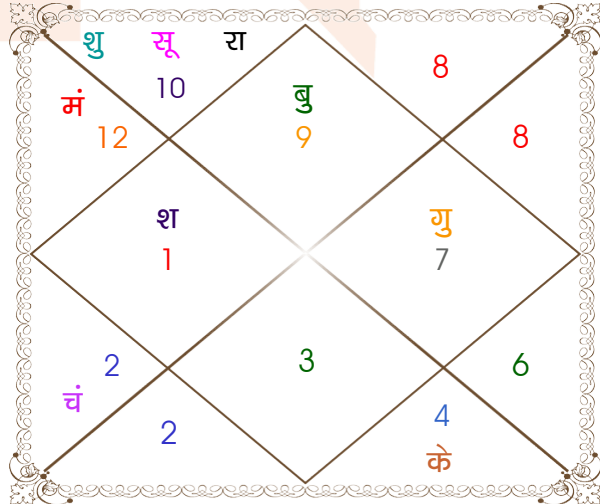
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली



भाव कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 9 वर्ष 8 मास 2 दिन

चंद्र 10 वर्ष 14/02/1970 18/10/1979	मंगल 7 वर्ष 18/10/1979 18/10/1986	राहु 18 वर्ष 18/10/1986 17/10/2004	गुरु 16 वर्ष 17/10/2004 17/10/2020	शनि 19 वर्ष 17/10/2020 18/10/2039
चंद्र 18/08/1970	मंगल 15/03/1980	राहु 30/06/1989	गुरु 06/12/2006	शनि 21/10/2023
मंगल 19/03/1971	राहु 03/04/1981	गुरु 24/11/1991	शनि 18/06/2009	बुध 30/06/2026
राहु 17/09/1972	गुरु 10/03/1982	शनि 30/09/1994	बुध 24/09/2011	केतु 09/08/2027
गुरु 17/01/1974	शनि 19/04/1983	बुध 18/04/1997	केतु 30/08/2012	शुक्र 09/10/2030
शनि 18/08/1975	बुध 15/04/1984	केतु 07/05/1998	शुक्र 01/05/2015	सूर्य 21/09/2031
बुध 17/01/1977	केतु 11/09/1984	शुक्र 06/05/2001	सूर्य 17/02/2016	चंद्र 21/04/2033
केतु 18/08/1977	शुक्र 11/11/1985	सूर्य 31/03/2002	चंद्र 18/06/2017	मंगल 31/05/2034
शुक्र 19/04/1979	सूर्य 19/03/1986	चंद्र 30/09/2003	मंगल 25/05/2018	राहु 06/04/2037
सूर्य 18/10/1979	चंद्र 18/10/1986	मंगल 17/10/2004	राहु 17/10/2020	गुरु 18/10/2039

बुध 17 वर्ष 18/10/2039 17/10/2056	केतु 7 वर्ष 17/10/2056 18/10/2063	शुक्र 20 वर्ष 18/10/2063 18/10/2083	सूर्य 6 वर्ष 18/10/2083 18/10/2089	चंद्र 10 वर्ष 18/10/2089 00/00/0000
बुध 16/03/2042	केतु 16/03/2057	शुक्र 17/02/2067	सूर्य 05/02/2084	चंद्र 14/02/2090
केतु 13/03/2043	शुक्र 16/05/2058	सूर्य 17/02/2068	चंद्र 05/08/2084	00/00/0000
शुक्र 11/01/2046	सूर्य 21/09/2058	चंद्र 18/10/2069	मंगल 11/12/2084	00/00/0000
सूर्य 17/11/2046	चंद्र 22/04/2059	मंगल 18/12/2070	राहु 05/11/2085	00/00/0000
चंद्र 18/04/2048	मंगल 18/09/2059	राहु 18/12/2073	गुरु 24/08/2086	00/00/0000
मंगल 15/04/2049	राहु 05/10/2060	गुरु 18/08/2076	शनि 06/08/2087	00/00/0000
राहु 02/11/2051	गुरु 11/09/2061	शनि 18/10/2079	बुध 12/06/2088	00/00/0000
गुरु 07/02/2054	शनि 21/10/2062	बुध 18/08/2082	केतु 17/10/2088	00/00/0000
शनि 17/10/2056	बुध 18/10/2063	केतु 18/10/2083	शुक्र 18/10/2089	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 9 वर्ष 8 मा 4 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध 21/10/2023 30/06/2026	शनि - केतु 30/06/2026 09/08/2027	शनि - शुक्र 09/08/2027 09/10/2030	शनि - सूर्य 09/10/2030 21/09/2031	शनि - चंद्र 21/09/2031 21/04/2033
बुध 09/03/2024 केतु 05/05/2024 शुक्र 16/10/2024 सूर्य 04/12/2024 चंद्र 24/02/2025 मंगल 22/04/2025 राहु 17/09/2025 गुरु 26/01/2026 शनि 30/06/2026	केतु 24/07/2026 शुक्र 30/09/2026 सूर्य 20/10/2026 चंद्र 22/11/2026 मंगल 16/12/2026 राहु 15/02/2027 गुरु 10/04/2027 शनि 13/06/2027 बुध 09/08/2027	शुक्र 18/02/2028 सूर्य 16/04/2028 चंद्र 21/07/2028 मंगल 27/09/2028 राहु 19/03/2029 गुरु 20/08/2029 शनि 20/02/2030 बुध 02/08/2030 केतु 09/10/2030	सूर्य 26/10/2030 चंद्र 24/11/2030 मंगल 14/12/2030 राहु 04/02/2031 गुरु 23/03/2031 शनि 17/05/2031 बुध 05/07/2031 केतु 25/07/2031 शुक्र 21/09/2031	चंद्र 08/11/2031 मंगल 12/12/2031 राहु 08/03/2032 गुरु 24/05/2032 शनि 23/08/2032 बुध 13/11/2032 केतु 17/12/2032 शुक्र 23/03/2033 सूर्य 21/04/2033
शनि - मंगल 21/04/2033 31/05/2034	शनि - राहु 31/05/2034 06/04/2037	शनि - गुरु 06/04/2037 18/10/2039	बुध - बुध 18/10/2039 16/03/2042	बुध - केतु 16/03/2042 13/03/2043
मंगल 15/05/2033 राहु 14/07/2033 गुरु 06/09/2033 शनि 10/11/2033 बुध 06/01/2034 केतु 30/01/2034 शुक्र 07/04/2034 सूर्य 27/04/2034 चंद्र 31/05/2034	राहु 03/11/2034 गुरु 22/03/2035 शनि 03/09/2035 बुध 28/01/2036 केतु 29/03/2036 शुक्र 18/09/2036 सूर्य 09/11/2036 चंद्र 04/02/2037 मंगल 06/04/2037	गुरु 07/08/2037 शनि 01/01/2038 बुध 12/05/2038 केतु 05/07/2038 शुक्र 06/12/2038 सूर्य 21/01/2039 चंद्र 08/04/2039 मंगल 01/06/2039 राहु 18/10/2039	बुध 20/02/2040 केतु 11/04/2040 शुक्र 05/09/2040 सूर्य 19/10/2040 चंद्र 31/12/2040 मंगल 20/02/2041 राहु 02/07/2041 गुरु 28/10/2041 शनि 16/03/2042	केतु 06/04/2042 शुक्र 05/06/2042 सूर्य 23/06/2042 चंद्र 24/07/2042 मंगल 14/08/2042 राहु 07/10/2042 गुरु 24/11/2042 शनि 21/01/2043 बुध 13/03/2043
बुध - शुक्र 13/03/2043 11/01/2046	बुध - सूर्य 11/01/2046 17/11/2046	बुध - चंद्र 17/11/2046 18/04/2048	बुध - मंगल 18/04/2048 15/04/2049	बुध - राहु 15/04/2049 02/11/2051
शुक्र 02/09/2043 सूर्य 23/10/2043 चंद्र 18/01/2044 मंगल 18/03/2044 राहु 20/08/2044 गुरु 05/01/2045 शनि 18/06/2045 बुध 12/11/2045 केतु 11/01/2046	सूर्य 26/01/2046 चंद्र 21/02/2046 मंगल 11/03/2046 राहु 27/04/2046 गुरु 07/06/2046 शनि 27/07/2046 बुध 09/09/2046 केतु 27/09/2046 शुक्र 17/11/2046	चंद्र 31/12/2046 मंगल 30/01/2047 राहु 17/04/2047 गुरु 25/06/2047 शनि 15/09/2047 बुध 28/11/2047 केतु 28/12/2047 शुक्र 23/03/2048 सूर्य 18/04/2048	मंगल 09/05/2048 राहु 02/07/2048 गुरु 20/08/2048 शनि 16/10/2048 बुध 06/12/2048 केतु 27/12/2048 शुक्र 26/02/2049 सूर्य 16/03/2049 चंद्र 15/04/2049	राहु 02/09/2049 गुरु 04/01/2050 शनि 31/05/2050 बुध 10/10/2050 केतु 04/12/2050 शुक्र 08/05/2051 सूर्य 24/06/2051 चंद्र 09/09/2051 मंगल 02/11/2051

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382
9835195382

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	5
भाग्यांक	6
मित्र अंक	3, 5, 9, 6
शत्रु अंक	2, 4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

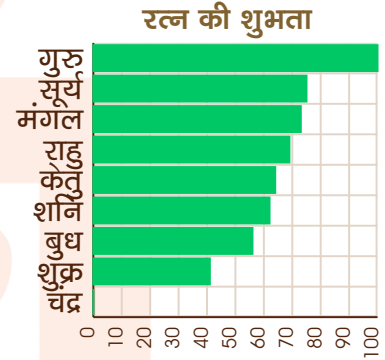
9835195382

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	धनार्जन, स्वास्थ्य, सुख
माणिक्य	सूर्य	75%	पराक्रम, भाग्योदय
मूंगा	मंगल	73%	सुख, सन्तति सुख, कम खर्च
गोमेद	राहु	69%	पराक्रम, सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	64%	भाग्योदय, पराक्रम
नीलम	शनि	62%	सन्तति सुख, धन, पराक्रम
पन्ना	बुध	56%	धन, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	41%	पराक्रम हानि, शत्रु व रोग, हानि
मोती	चंद्र	0%	शत्रु व रोग, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	18/10/1979	81%	0%	73%	62%	100%	41%	62%	56%	52%
मंगल	18/10/1986	81%	0%	86%	38%	100%	41%	62%	56%	70%
राहु	17/10/2004	62%	0%	61%	56%	100%	52%	69%	81%	52%
गुरु	17/10/2020	81%	0%	80%	38%	100%	16%	62%	69%	64%
शनि	18/10/2039	62%	0%	61%	62%	100%	52%	75%	75%	52%
बुध	17/10/2056	81%	0%	73%	69%	100%	52%	62%	69%	64%
केतु	18/10/2063	62%	0%	80%	56%	100%	52%	50%	56%	77%
शुक्र	18/10/2083	62%	0%	73%	62%	100%	58%	69%	75%	70%
सूर्य	18/10/2089	88%	0%	80%	56%	100%	16%	50%	56%	52%

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	14/02/1970-28/04/1971	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	28/04/1971-10/06/1973	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	10/06/1973-23/07/1975	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/09/1977-04/11/1979	15/03/1980-27/07/1980	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	सन्तति कष्ट
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	दम्पति
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	बदनामी
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	स्वास्थ्य

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चतुर्थ भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। इसके प्रभाव से जीवन में आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य जायदाद आदि की प्राप्ति परिश्रम से होगी। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न हो सकता है लेकिन दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है तथा वैवाहिक वार्ताओं में भी व्यवधान आ सकते हैं लेकिन अंततोगत्वा इसमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपकी पत्नी का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा आपसी संबंधों में कुछेक क्षणों को छोड़कर मधुरता बनी रहेगी।

चतुर्थ भाव में मंगल की स्थिति के फलस्वरूप आपको सांसारिक सुख संसाधन परिश्रम पूर्वक प्राप्त होंगे साथ ही सप्तम भाव पर दृष्टि के प्रभाव से पत्नी के स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा आप दाम्पत्य जीवन का सुख पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही उच्च पद तथा सामाजिक मान सम्मान प्राप्त करेंगे। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपके आय साधनों में सामान्यतया वृद्धि होगी। यदा कदा न्यूनता का भाव भी रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा तथा आपका सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के शुभ फलों में अधिक अनुकूलता के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाए। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इसके भंग होने से आप सर्वत्र सफलता के मार्ग पर

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

अग्रसर होंगे तथा सांसारिक सुख संसाधन ऐश्वर्य तथा वैभव की इच्छित प्राप्ति होगी तथा दाम्पत्य संबंधों में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहेगा।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें । विद्यालय में पुस्तकों का दान करें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

ग्रह फल

सूर्य

तृतीय भाव में सूर्य हो तो जातक, सरकार से सम्मान प्राप्त, कवि, भाई और सम्बन्धियों के कारण दुःखी, पराकमी, प्रतापशाली, लब्धप्रतिष्ठ एवं बलवान् होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, कोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य तृतीय भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा यदा कदा ही शारीरिक अस्वस्थता रहेगी। साथ ही उनकी आयु भी उत्तम रहेगी। पिता से आप जीवन में समस्त शुभकार्यों में सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम बढ़ाने के लिए वे नित्य यत्नशील रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे तथा अवसरानुकूल आपको उचित उपदेश तथा निर्देश भी देते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति हार्दिक स्नेह एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी कुछ मतभेदों को छोड़कर सामान्य रूप से मधुर ही रहेंगे। उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे उन्हें कोई दुःख या कष्ट न हो। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्यतया शुभ ही समझे जाएंगे।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

मंगल

चतुर्थभाव में मंगल हो तो जातक सन्ततिवान्, मातृसुखहीन, वाहनसुख, प्रवासी, अग्निभययुक्त, अल्पमृत्यु चा अपमृत्यु प्राप्त करने वाला, कृषक, बन्धुविरोधी एवं लाभ युक्त होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आपको मध्यम सुख प्राप्त होगा। उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा परन्तु यदा कदा शरीर से वे अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में भी वे आपको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आजीविका एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे। परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर इसमें कटुता का भी वातावरण बनेगा लेकिन यह अस्थायी रहेगा। साथ ही सुख दुःख एवं समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में आप उन्हें अपना आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। इस प्रकार मिलजुल कर आप अपनी अधिकांश समस्याओं का समाधान करके प्रसन्नानुभूति प्राप्त करेंगे।

बुध

द्वितीयभाव में बुध हो तो जातक सुखी, सुन्दर, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संही, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, मिष्टाभभोजी, गुणी एवं मितव्ययी होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराकमी, सद्ब्ययी, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।

तुला राशि में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य धार्मिक, प्रवृत्ति, निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक, बहुपुत्रवान् एवं सुखी होता है।

शुक्र

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी,

पराक्रमी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

शनि

पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानयुक्त, चंचल, उदासीन, विद्वान्, भ्रमणशील एवं बातरोगी होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, कूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

राहु

तृतीय भाव में राहु हो तो जातक योगाभ्यासी, विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी अपयशी, दुःखी एवं 48 वर्ष के बाद भाग्योदय होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(17/10/2020 - 18/10/2039)

शनि की महादशा उन्नीस वर्ष की है। आपकी कुण्डली में यह 17/10/2020 को आरम्भ और 18/10/2039 को समाप्त होगी। आपकी जन्म कुण्डली में शनि पंचम भाव में स्थित है। शनि एक अशुभ ग्रह है। यह विलम्ब और बाधा उत्पन्न करता है, किन्तु परिश्रम के फल से वंचित नहीं करता। यह जातकों की परीक्षा लेता है और उन्हें लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में पंचम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि 7वें 12वें और दूसरे भाव पर है और यह उनके कार्यों को प्रभावित कर रहा है। पंचम भाव सन्तान, सुख, कलात्मक प्रतिभा, प्रतिस्पर्धी गतिविधियाँ, बुद्धि, विशाल सम्पत्ति और आध्यात्मिक कार्यों का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी 5वें भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है। आप को सामान्यतया कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी। किन्तु आपको कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है।

अर्थ और सम्पत्ति :

पंचम भाव में स्थित शनि भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है जिससे आपको आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने के अनेक अवसर मिलेंगे। लॉटरी या प्रतियोगिता में विजय से आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। किन्तु, सम्पत्ति की प्राप्ति तथा संग्रह में बाधा उत्पन्न हो सकती है।

व्यवसाय :

आप जो भी व्यवसाय, व्यापार या सेवा अपनाएं उसमें विशेषज्ञ होंगे। शासन के लोगों से आपकी दोस्ती होगी और आप मन्त्रशास्त्र के ज्ञाता होंगे। आप किसी संस्था के प्रधान हो सकते हैं और आप गणित आदि शास्त्र के विद्वान् भी हो सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन मधुर होगा और आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे। आपका स्वभाव दम्भी होगा और आपके पड़ोसियों तथा संबंधियों से आपका संबंध मधुर नहीं रहेगा जिससे आपका घरेलू जीवन दुःखी होगा। अन्यथा जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे और आपका भाग्य भी परिवर्तनशील रहेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

उच्च शिक्षा के लिए समय पूरी तरह अनुकूल है। आप गणित के विद्वान् हो सकते हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

**अंतर्दशा :- शनि - बुध
(21/10/2023 - 30/06/2026)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 17/10/2020 को प्रारंभ होकर 18/10/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 2 वर्ष 8 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 21/10/2023 को प्रारंभ होकर 30/06/2026 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। द्वितीय भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के अष्टम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धार्मिक और विद्वान बनेंगे। दर्शन और अध्यात्म में रुचि हो सकती है। उद्योग-व्यापार से संबंधित विषयों पर व्याख्यान द्वारा धन अर्जित कर सकते हैं। बुद्धिमत्ता और शक्ति में वृद्धि होगी।

विद्या के आधार पर धन अर्जित करेंगे। समाज सेवा और दान-धर्म पर धन व्यय करेंगे। धन की बचत में भी दक्ष होंगे। यह अंतर्दशा बहुत शुभ रहेगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 6 (रत्ती के पन्ने की सोने की अंगूठी दायें हाथ की मध्यमा उंगली में बुधवार के दिन प्रातःकाल प्रार्थना करते हुए धारण करें।

**अंतर्दशा :- शनि - केतु
(30/06/2026 - 09/08/2027)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 17/10/2020 को प्रारंभ होकर 18/10/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 30/06/2026 को प्रारंभ होकर 09/08/2027 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। नवम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है। केतु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है।

इस अवधि में आपके माता-पिता और गुरु से संबंध बिगड़ सकते हैं। आप उनके साथ दुर्व्यवहार कर सकते हैं। क्रोध की मात्रा अधिक होगी। यद्यपि आप साहसी होंगे मगर अपनी शक्तियों का इस्तेमाल दूसरों को बदनाम करने में लगाएंगे। स्वभाव अक्खड़ हो सकता है ; दिखावापसंद हो सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72000 जाप

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382
9835195382

करें।

**अंतर्दशा :- शनि - शुक्र
(09/08/2027 - 09/10/2030)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 17/10/2020 को प्रारंभ होकर 18/10/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की होगी जो आपके लिए 09/08/2027 को प्रारंभ होकर 09/10/2030 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। तृतीय भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के नवम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी बुद्धि तीव्र होगी, मगर कार्यक्षमता में कुछ कमी आ सकती है। संगीत और कला में रुचि हो सकती है। आर्थिक स्थिति में कुछ गिरावट आ सकती है, क्योंकि आपकी विवादों में दिलचस्पी हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के वैदिक मंत्र के 16000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शनि - सूर्य
(09/10/2030 - 21/09/2031)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 17/10/2020 को प्रारंभ होकर 18/10/2039 को समाप्त होगी।

शनि महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 11 मास 12 दिन की होती है। आपके लिए यह 09/10/2030 को प्रारंभ होकर 21/09/2031 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में तीसरे भाव में स्थित है। तीसरा भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

तीसरे भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के 9वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी महत्वपूर्ण व्यक्तियों से लाभदायक मित्रता होगी। साहसी और साधनसंपन्न होंगे। प्रोन्नति हो सकती है; सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। हर काम में सफलता मिलेगी।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य के वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें। सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382